दुनिया में दूसरा मंटो पैदा नहीं हो सकता

मंटो की जन्मशती समारोह में विमर्श करने जुटे देशभर के जाने-जाने हिंदी व उर्दू के साहित्यकार

शहर इलाहाबाद और यहां की अदबी रवायत व गंगा-जमुनी तहज़ीब के लिए आज का दिन यादगार बन गया क्योंकि विभाजन की त्रासदी, स्त्री विषयक मुद्दों पर बेवाकी से कलम चलाने वाले कथाकार सआदत हसन मंटो के विचारों को जीवंत कर दिया हिंदी के नामचीन साहित्यकारों ने। अवसर था महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के इलाहाबाद क्षेत्रीय केंद्र व हिन्दुस्तानी एकेडमी के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित 'मंटो एकाग्र' पर दो दिवसीय (09-10 जून) जन्मशती समारोह का। समारोह में बात चली तो एक-एक परतें खुलती गईं और मंटो के जीवन के कई तथ्य निकलकर सामने आए। किसी ने यादों के झरोखें से मंटो के जीवन में तांक-झांक की तो किसी ने उनकी रचनाओं और उनसे जुड़ी तमाम बातों को सबसे साझा किया। हर कोई मंटो के बारे में जितना जानता था उसे अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचाना चाहता था। विचारों के सैलाब उमड़ते रहे और निचोड़ आया कि दुनिया में दूसरा मंटो पैदा नहीं हो सकता। मंटो के विचारों के बहाने, उनकी कहानी 'खोल दो', 'काली शलवार', 'ठंडा गोश्त', 'नंगी आवाजें', 'धुआं' सहित विभाजन की त्रासदी, स्त्री-पुरूषों संबंधों पर बेवाक् चर्चा कर मंटो की शख्शियत की सलीके से परत दर परत पड़ताल की गई।

मंटो एकाग्र समारोह के उदघाटन सत्र में मंच पर बाएं से प्रो.ए.ए.फातमी, प्रो.नामवर सिंह, विभूति नारायण राय व रवीन्द्र कालिया।

मूल्यांकन की दृष्टि से मंटो को दुबारा पढ़े जाने की है जरूरत : वर्धा विश्वविद्यालय द्वारा 'बीसवीं सदी का अर्थ : जन्मशती का संदर्भ' श्रृंखला के अंतर्गत आठवें कार्यक्रम के तहत 'मंटो एकाग्र' समारोह के उदघाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय के कुलाधिपति प्रो.नामवर सिंह बोले, समाज में जो घटित होता था मंटो वही लिखते थे। वे दकियानूसी समाज से ऊपर की बातें करते थे-खासकर स्त्री पुरूष संबंधों पर। उनकी लिखी पांच कहानियों पर अश्लीलता के आरोप में मुकदमे चले। उस समय उसने जो कुछ लिखा, वह वर्तमान समय में लिखता तो शायद उसपर अश्लीलता का आरोप नहीं लगता। मंटो उनमें से नहीं था जिनकी लेखनी तो पाक साफ होती किंतु वैयक्तिक जीवन तो ईश्वर ही जाने। मंटो को मूल्यांकन की दृष्टि से दुबारा पढ़े जाने की जरूरत है।

नया ज्ञानोदय के संपादक रवीन्द्र कालिया ने विमर्श को बढ़ाते हुए कहा कि मंटो में एक शरारती जज्बा था जिसके चलते वह अपनी कहानियों का शीर्षक विवादित रखते थे। बंटवारे के समय पाकिस्तान जाते समय मंटो ने अपने फिल्म इंडस्ट्री के मित्र गोप और अशोक के साथ पाकिस्तान और हिन्दुस्तान जिंदाबाद के नारे लगाए थे। उन्होंने कहा कि हिंदी में कई गोर्की मिल जाएंगें। सभी अपने-अपने गोर्की तलाश लेते हैं। हिंदी में कोई मंटो नहीं है, उर्दू में भी दूसरे नहीं हैं। बंटवारे के समय मंटो के पाकिस्तान चले जाने पर उन्होंने अफसोस जताया।

बतौर विशिष्ट वक्ता कुलपति विभूति नारायण राय बोले, कई बार कई बड़े फैसले भावुक क्षण में ले लिये जाते हैं, मंटो का पाकिस्तान जाने का फैसला भी कुछ ऐसा ही था। मंटो समाज के घृणात्मक पक्ष को बड़े बेबाकी से अपने लेखन में लाते थे, समाज में उसकी क्या प्रतिक्रिया होगी इसकी वे परवाह नहीं किया करते थे। प्रगतिशील लेखक संघ से उनका दुराव था। उस समय के प्रगतिशील खांचे में वो बंधने को तैयार नहीं थे। यह भी सच है कि उनका सही मूल्यांकन प्रगतिवादी ही कर सकते हैं।

लखनऊ के आबिद सुहैल ने कहा कि यात्रा ही सआदत हसन से मंटो हो जाने तक की यात्रा थी। मुंबई में उन्हें फिल्मों से दौलत भी मिली और वहां की गरीबी व स्त्रियों-खासकर वेश्याओं की विवशताओं एवं मनोदशाओं-विविध परिस्थितियों से परिचय भी मिला। उन्हें खरीददारी व दोस्तों में दौलत खर्च करने की आदत थी। उन्होंने एक नये खांचे में रखकर सआदत और मंटो को दो रूपों में देखने का प्रयास किया।

मंटो की न कोई दूसरी मिसाल है और न होगी : 'मंटो एकाग्र' पर आयोजित समारोह के दूसरे दिन अकादमिक सत्र की अध्यक्षता कथाकार दूधनाथ सिंह ने की। इस अवसर पर शकील सिद्दीकी (लखनऊ), तदभव के संपादक अखिलेश, प्रो.तारिक छतारी (अलीगढ़), डॉ. निगार अज़ीम (दिल्ली) बतौर वक्ता मंचस्थ थे।

मंटो एकाग्र समारोह के अकादमिक सत्र में मंच पर बाएं से अखिलेश, शकील सिद्दीकी, दूधनाथ सिंह व प्रो.तारिक छतारी।

दूधनाथ सिंह बोले, इतिहासकार से जो कुछ छूटता है साहित्यकार उसे दर्ज करता है। मंटो कहते थे अफ़साना मेरे दिमाग में नहीं जेब में होता है। मंटो ने अपनी कुछ कहानियों में यही कार्य किया है। अपनी जातीय जिंदगी में वे निहायत शरीफ और कंजरवेटिव आदमी थे। अपने संस्मरणों में उन्होंने किसी पर रियायत नहीं की चाहे वह उनका कितना ही खास क्यों न हो। उन्होंने कहा कि मंटो बनते हुए सिनेमाई दुनिया का भी इतिहास हैं। रेडियो नाटकों को पढ़ने पर पता चलता है कि वे संवादों के भी बेहतरीन लेखक थे। मंटो को किसी खास खांचे में ढ़ालने का मैं विरोध करता हूं। उसे प्रगतिशील खांचे में बिल्कुल ही नहीं रखा जा सकता है। मंटो की न कोई दूसरी मिसाल है और न होगी।

तदभव के संपादक अखिलेश ने कहा कि मंटो की रचनाओं में उनके स्वयं के साथ ही मिथक भी शामिल हो जाता है। सारे मिथकों एवं वर्जनाओं से पूर्वाग्रही अवधारणाओं के परे रखकर जब हम उनकी रचनाओं को पढ़ते हैं तो एक दूसरा रूप भी हमारे सामने आता है और खुद गढ़ी गई राय भी टूटती है। सेक्स और यौनिकता के प्रसंगों के सहारे संबंधों की विसंगतियों एवं स्त्री-पुरूष मनोवृत्तियों का मनोवैज्ञानिक रूप उभरता है। उनकी कहानियों का अंत ही उनकी कहानियों का पूरा ढ़ांचा निर्धारित करता है।

लखनऊ से आए शकील सिद्दीकी ने कहा कि मंटो ने अपनी कहानियों में एक नया मुहावरा गढ़ा है। मंटो की कहानियां वेश्याओं के जीवन यौनवर्जनाओं पर आधारित रही हैं। इसके चलते उन्हें कभी सकारात्मक नजरिए से देखने की कोशिश नहीं की गई। उनकी कहानियों के पात्र हिंदुस्तान और पाकिस्तान के दबे कुचले आमजन रहे हैं।

अलीगढ़ के प्रो.तारिक छतारी ने कहा कि मंटो आज भी तरक्कीपसंद अफ़सानानिगारों और दानिश्वरों के बीच चर्चा का विषय है। तरक्कीपसंदो ने बाद में उन्हें कोई खास तवज्जो नहीं दी किंतु उन्होंने अपने अफसानों में अपने इस अंदाज को नहीं छोड़ा। जिस जमीन में उनकी जड़ें हैं उसे छोड़कर जाने का दर्द उनके अफ़सानों में हमेशा दिखाई दिया है। विभाजन की त्रासदी का ऐसा दर्द उर्दू के अफ़सानों में अन्यत्र दिखाई नहीं देता। सांप्रदायिकता पर लिखने वाले इस लेखक के लेखन में कहीं से भी सांप्रदायिक आग्रह दिखाई नहीं देता। उन्होंने बड़ी ही संजीदगी से हिंदुओ और सिखों के दर्द का बयान किया है।

डॉ.निगार अज़ीम ने कहा कि किसी घटना को देखने का मंटो का अंदाज कुछ अलग था। उनमें घटना को अफ़साना बना देने की कला और अफ़साने से पाठकों द्वारा अपने-अपने मकसद और रूचि के अनुसार अपने पसंद चुन लेने का वर्ताव मंटो की कलम ने हर जगह अपनी अकूत करामात दिखाई है।

मंटो को फिर से तलाशने की है जरूरत: मंटो एकाग्र कार्यक्रम में प्रो.अक़ील रिज़वी की अध्यक्षता में तीसरे अकादमिक सत्र के दौरान प्रो.ए.ए.फातमी (इलाहाबाद), प्रो.सग़ीर इफ़राहीम (अलीगढ़), डॉ.कृष्ण मोहन (बनारस) बतौर वक्ता मंचस्थ थे।

मंटो एकाग्र समारोह के तृतीय अकादमिक सत्र में वक्तव्य देते हुए अकील रिज़वी तथा मंच पर बाएं से कृष्ण मोहन, सगीर इफराहीम व प्रो.ए.ए.फातमी।

प्रो.अकील रिजवी बोले, मंटो को अभी फिर से तलाश करना चाहिए क्योंकि जो भी काम अबतक हुआ है वो काफी नहीं है उसमें बहुत सी तलाश बांकी है। मंटो की जिंदगी उसके सोच के तरीके उन लोगों के हालात जिन पर उन्होंने कहानियां लिखी हैं और वह परिस्थितियां अब भी किसी न किसी शक्ल में मौजूद हैं। यही बड़े लेखक की पहचान है कि हर दौर में प्रसांगिक रहे और नए सवालात भी पैदा करता रहे। मंटो पर इतना बड़ा जलसा पहली बार करवाने के लिए हिंदी विश्वविद्यालय को शुक्रिया अदा करता हूं। मेरी ख्वाहिश है कि हिंदी और उर्दू दोनों के लेखक और पब्लिशर्स मिलकर मंटो की कहानियां छापे और मंटो का पुनर्मूल्यांकन की ओर भी कदम बढ़ाएं।

बतौर वक्ता प्रो.ए.ए.फातमी ने कहा कि मंटो अपने समकालीन साहित्यकारों द्वारा सताए नहीं गए बल्कि उनमें आपसी टकराहट थी। मंटो ने बदज़बान, बदलग़ाम और ईमानदार लहजे में बेफ़िक्री से लिखा। उनमें तरक्कीपसंद का अंतविरोध भी दिखाई देता है। कई लेखकों ने मंटो को, बेजुबान मंटो, उर्दू का बदनाम मंटो, बेलगाम मंटो की उपाधि से नवाजा तो किसी ने उसे दुनिया का सबसे बड़ा अफ़सानानिग़ार मंटो भी कहा।

वाराणसी के कृष्ण मोहन ने कहा कि मंटो आदमी की उस नेचुरल डिमांड को सामने लाने वाले साहित्यकार हैं जिसे अक्सर सामाजिक रूप से दबा दिया जाता है। यह कहना गलत है कि मंटो की कहानियां केवल जिस्मानी रिश्तों को महत्व देती हैं। उन्होंने अपनी कहानियों में नैतिकता के पाखंड को खारिज करते हुए मनुष्य की प्राकृतिक संवेदनाओं को सहज रूप में उकेरने का प्रयास किया है। प्रो.सग़ीर इफ़राहीम बोले, मंटो की कहानियों में वेश्या पात्र समाज को गंदा नहीं कर रही हैं बल्कि उसमें व्याप्त गंदगी को दूर करने के लिए खुद को ढ़ाल के रूप में पेश करती हैं।

समकालीन सच्चाई है मंटो की कहानी- हिंदी की सुप्रसिद्ध लेखिका ममता कालिया की अध्यक्षता में असरार गांधी, सरवत खॉ, रतन सिंह, महेश कटारे ने अपनी कहानियों का पाठ किया। कहानी की महफिल सत्र में वक्ताओं के विमर्श का लब्बोलुआब यही था कि अभी बाकी है मंटो की तलाश।

मंटो एकाग्र समारोह के समापन अवसर पर कहानी की महफिल सत्र के दौरान मंच पर बाएं से असरार गांधी, महेश कटारे, ममता कालिया, रतन सिंह व सरवत खाँ।

इस दौरान ममता कालिया बोलीं, वही कहानी पाठक को आकर्षित करती है जिसमें कहानीपन हो। कहानी में समय का प्रभाव दिखना चाहिए। कथा का प्रवाह और शिल्पगत विशेषताएं ही कहानी को लंबा जीवन देती हैं। अगर कहानी समसामयिक घटनाओं पर आधारित हो तो उसमें यथार्थ का पुट स्वत: आ जाता है। मंटो ने उन घटनाओं को चुना जो घट रही थीं। उनकी कहानियां समकालीन सच्चाई हैं। जन्मशती श्रृंखला के संयोजक और विश्वविद्यालय के इलाहाबाद केंद्र के प्रभारी प्रो.संतोष भदौरिया ने आभार व्यक्त करते हुए कहा कि वर्धा विश्वविद्यालय द्वारा बीसवी सदी का अर्थ और जन्मशती का संदर्भ श्रृंखला के तहत यह आठवां आयोजन है। चार आयोजन उपेन्द्र नाथ अश्क, फैज अहमद फैज, भुवनेश्वर और मंटो का कार्यक्रम इसी संगम नगरी में हुआ। नागार्जुन को पटना में और केदारनाथ अग्रवाल को बांदा में याद करने के लिए हम सभी इकट्ठा हुए थे। उन्होंने कहा कि यह सभागार छोटा पड़ गया पर यहां के साहित्य प्रेमियों का दिल बड़ा है।

मंटो एकाग्र समारोह के दौरान उपस्थित श्रोता

प्रस्तुति- अमित विश्वास
सहायक संपादक
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र)
मो.09970244359